" राष्ट्रीय शिक्षा नीति : आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सूचना संचार तंत्र (ICT) और डिजिटलीकरण की भूमिका "

शोधार्थी : दिव्यारानू

पुस्तकालय एंव सूचना विज्ञान विभाग

भारतीय विश्वविद्यालय, दुर्ग , छत्तीसगढ़

सारांश

वर्तमान में शिक्षा और सूचना प्रबंधन का स्वरूप तेजी से बदल रहा है|\

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) इसी बदलाव की एक क्रांतिकारी कड़ी है, जो भारत की समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS) को पुनर्जीवित करने और उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक ढांचे में ढालने का मार्ग प्रशस्त करती है | आयुर्वेद जो विश्व की प्राचीनतम और वैज्ञानिक चिकित्सा विधाओं में से एक है | विशाल ज्ञान भंडार आज भी दुर्लभ हस्तलिपियों, पाण्डुलिपियों और पुरानी पुस्तकें पुस्तकालयों में संचित है | यह ज्ञान उचित तकनीकी संसाधनों के आभाव में नई पीढ़ी के शोधकर्ताओं की पहुँच से दूर होता जा रहा है | इस शोध का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक आयुर्वेदिक पुस्तकालयों को सूचना संचार तंत्र (ICT) के माध्यम से 'स्मार्ट लाइब्रेरी' में बदलना और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पाण्डुलिपियों की डिजिटलीकरण करना है |

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), आयुर्वेदिक पुस्तकालय, सूचना संचार तंत्र (ICT), डिजिटलीकरण |

प्रस्तावना

आयुर्वेद भारत की प्राचीन ज्ञान संपदा में केवल चिकित्सा प्रणाली नही है, यह जीवन जीने की कला है | आदिकाल से यह अमूल्य ज्ञान दुर्लभ पाण्डुलिपियों, ताड़पत्रों या भोजपत्रो के रूप में पुस्तकालयों में सुरक्षित रहा | आज वर्तमान सूचना युग में दुर्लभ ज्ञान को नष्ट होने से बचाने के लिये सूचना संचार तंत्र का उपयोग अनिवार्य हो गया है, जिससे पुस्तकालयों का डिजीटलीकरण करके दुर्लभ ज्ञान को सुरक्षित किया जा सकता है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के तहत भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा का आधार बनाने पर जोर दिया गया है | इसके अंतर्गत आयुर्वेदिक पुस्तकालयों अब किताबों का संग्रह मात्र नही है,बल्कि 'डिजिटल नालेज हब' के रूप में विकसित हो रहा है | प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य यह विश्लेषण करना है कि कैसे सूचना संचार तंत्र (ICT) का प्रभावी उपयोग करके हम आयुर्वेदिक पुस्तकालयों की पारंपरिक और भौतिक सीमाओं को तोड़ सकते है | इस अध्ययन में डिजीटलीकरण की प्रक्रिया केवल डेटा संग्रह नहीं है बल्कि आयुर्वेद के गूढ़ सिध्दान्तो को आधुनिक शोध के अनुरूप वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाने की एक अनिवार्य प्रक्रिया है |

उद्देश्य :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत प्राचीन ग्रंथो, पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण करना और बहुभाषीय अनुवाद करना |
2. पारंपरिक आयुर्वेदिक पुस्तकालय को सूचना संचार तंत्र (ICT) के माध्यम से स्मार्ट लाइब्रेरी बनाना |
3. आयुर्वेदिक पुस्तकालयों के उपयोगकर्ता को डिजिटल प्लेटफार्मो से अवगत कराना |

साहित्य समीक्षा :-

- **बहरा,पी.बी.और दास, अंजली (2021)** के शोध में बताया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 केवल शैक्षिक सुधार नहीं है बल्कि यह आयुर्वेद जैसी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को डिजिटल युग में पुनर्स्थापित करने का ब्लूप्रिंट है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत आयुर्वेद शिक्षा को Swayam, e-PG Pathshala और MOOCs जैसे प्लेटफार्मो के माध्यम से आधुनिक बनाने पर जोर दिया गया है ,सूचना संचार तंत्र (ICT) के माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रो में आयुर्वेदिक परामर्श पहुँचाना आसान और महामारी के समय ई-संजीवनी पोर्टल के सफल प्रयोग को केस स्टडी के रूप में देखा गया है |
- **शर्मा, आर. के (2018)** के लेख "लाइब्रेरी एंड इंफार्मेशन सर्विस इन आयुर्वेदिक इंस्टीट्यूट इन इंडिया" में आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में संसाधनो के आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है | शोध में पाया गया की अधिकांश आयुर्वेदिक पुस्तकालय अभी भी पारंपरिक पद्धति पर निर्भर है, current Awaraness Service (CAS) और Selective Dissemination of Information (SDI) का उपयोग सीमित है | निष्कर्ष में कहा गया है आयुर्वेदिक पुस्तकालयों को केवल पुस्तको का स्टोर बनाने के बजाय सूचना का गतिशील केंद्र बनाना होगा | दुर्लभ पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण नही किया गया तो हम अपनी अमूल्य विरासत खो देंगे |
- **देवी, राजिता** ने 2020 में उत्तर कर्नाटक के आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालय उपयोगकर्ता द्वारा ई.संसाधनों की धारणा और उपयोग पर अध्ययन है। अध्ययन में 23 आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय का चयन किया गया था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में नवीनतम जानकारी प्राप्त करने के लिए ई.संसाधनों का महत्व है। ई.संसाधनों के बारे में जागरुकता और उनके उपयोग के ज्ञान की कमी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत में 1968 में लागू किया फिर 1986 में यह नीति आई थी, 1992 में संशोधन किये गये थे | लगभग 34 वर्षों के बाद 29 जुलाई 2020 में डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति ने इस नीति का मसौदा (Draft) तैयार किया | इस नीति ने स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव किये है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य लक्ष्य देश की जीडीपी का शिक्षा पर 6% खर्च किया जायेगा जो वर्तमान में लगभग 4.4% है, साक्षरता दर स्कूली शिक्षा का 2030 तक 100% किया जायेगा , रटने के पद्धति को खत्म करके

कौशल विकास को बढ़ावा देना, मातृभाषा एंव क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा को बढ़ावा देना, उच्च शिक्षा में बहु-प्रवेश और निकास की सुविधा देना, शोध और अनुसन्धान को बढ़ावा एंव अन्तर्राष्ट्रीयकरण इत्यादि | भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की अपनी बौद्धिक विरासत है जो आदिकाल से विकसित हुआ और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ रहा है |

आयुर्वेदिक पुस्तकालय : आयुर्वेदिक पुस्तकालय वह विशेष पुस्तकालय है जिसमें आयुर्वेद से संबंधित ग्रंथ, पाण्डुलिपियां, शोध-पत्र एवं अन्य सामग्री उपलब्ध होती है | आयुर्वेदिक पुस्तकालय वह ज्ञान का भंडार है जहाँ पुरानी भारतीय चिकित्सा विज्ञान संग्रहित है, यह पुस्तकालय किताबों का संग्रह मात्र नही है बल्कि मानव समाज की स्वास्थ्य एंव जीवन जीने की कला का दस्तावेज है | इस पुस्तकालयों में प्राचीन ग्रंथो तथा पाण्डुलिपियों का संरक्षण होती है जो ताड़ के पत्तो या भोजपत्र पर लिखी हुई दुर्लभ ज्ञान है जिसमें ऐसी औषधियाँ और उपचार विधियाँ होती है जो आज प्राय: लुप्त हो रही है जिसे संरक्षण करने की आवश्यकता है | आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथो में 'चरक संहिता' जो आचार्य चरक द्वारा रचित है यह काय-चिकित्सा का सबसे प्रमाणिक ग्रंथ है इस ग्रंथ में जीवनशैली, आहार और औषधियों का वर्णन है | 'सुश्रुत संहिता' आचार्य सुश्रुत द्वारा रचित शल्य-चिकित्सा से संबंधित ग्रंथ है जिसमें प्लास्टिक सर्जरी और मोतियाबिंद जैसे आपरेशनों का प्राचीन विवरण है |'अष्टांग हृदय' आचार्य वाग्भट्ट द्वारा रचित है | माधव निदान, शारंगधर संहिता, भावप्रकाश, अष्टांग संग्रह, काश्यप संहिता , हरित संहिता जैसे इत्यादि ग्रंथ है |

आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सूचना संचार तंत्र (ICT) का महत्व

1. आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सूचना संचार तंत्र (ICT) के माध्यम से उपयोगकर्ता कम समय में आवश्यक सूचना प्राप्त कर सकते है |
2. आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में प्राचीन ग्रंथो तथा दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह होता है जिसे ICT के माध्यम से डिजिटलीकरण करके सुरक्षित किया जा सकता है |
3. ICT के माध्यम से आयुर्वेदिक पुस्तकालयों के सेवाओं (सूचीकरण, पुस्तक अदान-प्रदान आदि) का स्वचालन किया जा सकता है |
4. आयुर्वेदिक पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं को ICT के माध्यम से कहीं भी किसी भी समय अपने मोबाइल या कम्पूटर पर सूचना प्राप्त कर सकते है |
5. आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में संसाधन साझाकरण (Resource Sharing) की प्रक्रिया में ICT का उपयोग करके जैसे साझा कैटलॉग, डिजिटल डॉक्यूमेंट डिलीवरी, आयुष ग्रिड नेटवर्क से बजट की बचत की जा सकती है |

चुनौतियाँ :

1. **दुर्लभ पाण्डुलिपियां:** आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में अधिकांश ज्ञान दुर्लभ पांडुलिपियों, ताड़पत्रों तथा हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथो के रूप में उपलब्ध है | जो धीरे-धीरे समय के साथ नष्ट हो रहा है |

2. **अनुवाद की समस्या:** आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में हजारों वर्ष प्राचीन ग्रंथो तथा पाण्डुलिपियां होने के कारण इसकी भाषा संस्कृत/प्राकृत है जिसे अनुवाद करना सबसे बड़ी चुनौतियाँ बन गई है |
3. **बजट का आभाव :** बजट का आभाव आयुर्वेदिक पुस्तकालयों के लिए बड़ी चुनौतियाँ बन गई है | आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सरकारी अनुदान कम प्राप्त होती है |

समाधान :

1. **प्राचीन ग्रंथो का डिजिटलीकरण:** प्राचीन ग्रंथो तथा दुर्लभ पांडुलिपियों को सूचना संचार तंत्र (ICT) के माध्यम डिजिटलीकरण करके नष्ट होने से बचाया जा सकता है और आने वाले पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है|
2. **OCR तकनीकी का उपयोग:** OCR(Optical Character Recognition) तकनीकी से ग्रंथो को स्कैन करके सर्च करने योग्य टेक्स्ट में बदला जाता है |
3. **साफ्टवेयर का उपयोग:** आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में कोहा(Koha) और सोल(Soul) जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग करके पुस्तकालय स्वचालन को सरल बना दिया है |

आयुर्वेदिक पुस्तकालय और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संबंध :

भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय परंपरागत ज्ञान को शिक्षा से जोड़ने पर विशेष बल देती है | आयुर्वेदिक पुस्तकालय में पुरानी ग्रंथ जैसे चरक संहिता, **अष्टांग हृ**दयम आदि ग्रंथो की संग्रह एवं संरक्षण किया जाता है |

बहुविषयक शिक्षा में योगदान - आयुर्वेद का योग, दर्शनशास्त्र, जीवविज्ञान,रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान जैसे आदि विषयों से संबंध है | आयुर्वेदिक पुस्तकालय में इस तरह के विषयों का साहित्य उपलब्ध कराकर शिक्षा को बहुविषयक बनाने में योगदान दे रहे है |

शोध और नवाचार को प्रोत्साहन - राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शोध और नवाचार से समाज को सशक्त बनाने पर विशेष बल दिया गया है | आयुर्वेदिक पुस्तकालय में उपलब्ध शोध-पत्र, थीसिस एवं संदर्भ सामग्री नवीन शोध कार्य को बढ़ावा दे रही है |

डिजिटल शिक्षा और सूचना संचार तंत्र – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 डिजिटल शिक्षा को अत्यधिक बढ़ावा दे रही है | आयुर्वेदिक पुस्तकालय ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, ई-डेटाबेस आदि डिजिटल संग्रह की सुविधा प्रदान करके डिजिटल शिक्षा एवं सूचना संचार तंत्र को बढ़ावा देने में सहयोग प्रदान कर रहे है |

मातृभाषा में अध्ययन सामग्री – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए आयुर्वेदिक पुस्तकालय हिंदी और संस्कृत भाषा में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को करता है |

निष्कर्ष : यह शोध पत्र आयुर्वेद की प्राचीन विरासत और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करेगा | जब हमारे पारंपरिक ग्रंथ डिजिटल रूप में विश्वव्यापी स्तर पर सुलभ होंगे, तभी बहुविषयक अनुसन्धान को वास्तविक बढ़ावा दे सकेंगे | आयुर्वेदिक पुस्तकालयों का यह आधुनिक स्वरूप न केवल भारत को 'ज्ञान की महाशक्ति' बनाने में सहायक होगा, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के स्वास्थ्य एंव कल्याण के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति के नये द्वार भी खोलेगा, यह शोध उन तकनीकी संभावनाओं पर प्रकाश डालता है जिससे हमारे पुस्तकालय भविष्य के 'स्मार्ट नालेज हब' बन सकें | आयुर्वेदिक पुस्तकालय अब केवल शांत कमरे नहीं रहे, बल्कि वे ऐसे 'ज्ञान केंद्र' बन गये है जो भारत को वापस 'विश्वगुरु' बनाने की दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के सपनों को सकार कर रहे है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत आयुर्वेदिक पुस्तकालयों को डिजिटलीकरण करके भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैश्विक स्तर पर स्थापित करेगा | आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सूचना संचार तंत्र (ICT) के उपयोग से दुर्लभ पांडुलिपियों, ताड़पत्रों तथा हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथो को डिजिटल रिपोजिटरी के माध्यम भविष्य के पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सकता है | आयुष ग्रिड तथा साझा ऑनलाइन कैटलॉग के उपयोग से आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में बजट की समस्या से निपटा जा सकता है और आयुर्वेदिक पुस्तकालयों में सॉफ्टवेयर जैसे कोहा (Koha) और सोल (Soul) का उपयोग करके पुस्तकालय स्वचालन को सुचारू रूप से क्रियान्वयन किया जा सकता है |

संदर्भ सूची

1. आयुष मंत्रालय (2020) ई-गवर्नेस एंव आयुष क्षेत्र में डिजिटल पहल की वार्षिक रिपोर्ट. भारत सरकार |
2. बहरा,पी.बी.और दास, अंजली (2021) द रोल ऑफ ICT इन ट्रेडिशनल मेडिसीन : पोस्ट-NEP 2020 प्रेस्पेक्टिव. जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इन्टेग्रटीव मेडिसीन,12 (2) |
3. भारत सरकार (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली |
4. कुमार, कृष्ण (2018) लाइब्रेरी आटोमेशन एवं नेटवर्किंग. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस |
5. नेशनल नालेज कमीशन (2018) पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण पर बुनियादी सिफारिशें |
6. शर्मा, ए. के. (2022) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: आयुर्वेदिक पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण की दिशा में एक नया कदम | भारतीय पुस्तकालय एंव सूचना विज्ञान पत्रिका,15(2), 45-58 |
7. शर्मा, पी. के. (2021). छत्तीसगढ़ की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का डिजिटलीकरण, इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नालेज |
8. शर्मा, आर. के (2018). लाइब्रेरी एंड इंफार्मेशन सर्विस इन आयुर्वेदिक इंस्टीट्यूट इन इंडिया. हरिटेज पब्लिशर्स, नई दिल्ली |

9. शास्त्री, के. एन.,एंव चतुर्वेदी,जी.एन.(संपादक).चरक संहिता.चौखाम्भा भारती आकादमी,वाराणसी |
10. सतर्क, एम. पी.पुस्तकालय स्वचालन एवं सूचना प्रौद्योगिकी |
11. सिंह, पी. एवं वर्मा, एस.(2021). डिजिटल इंडिया और आयुर्वेद का भविष्य. आयुष प्रकाशन, नई दिल्ली |
12. विकिपीडिया (2026). "आयुर्वेद" एवं "लाइब्रेरी आटोमेशन". http://hi.wikipediaorg/ से प्राप्त |
13. TKDL(Traditional Knowledge Digital Library) CSIR & Ministry of Ayush. [URL: http://www.tkdl.res.in] .
14. DHARA (Digital Helpline for Ayurveda Research Articles). [URL: http://www.dharaonline.org].